समर्पण

“एक परिवार, अनगिनत कहानियाँ”



जवाहर नवोदय विद्यालय

------दृष्टि और इतिहास------

स्थापना की पृष्ठभूमि

जवाहर नवोदय विद्यालय (JNV) की स्थापना राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के अंतर्गत की गई। इसके पीछे भारत के पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की दूरदर्शी सोच थी।
उनका मानना था कि देश की असली प्रतिभा गाँवों में बसती है,
लेकिन संसाधनों की कमी के कारण वह आगे नहीं बढ़ पाती।
इसी सोच को साकार करने के लिए नवोदय विद्यालयों की शुरुआत हुई।

समान शिक्षा का सपना

नवोदय विद्यालय का सबसे बड़ा उद्देश्य था —ग्रामीण और शहरी शिक्षा के बीच की खाई को खत्म करना। यहाँ ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिभाशाली बच्चों को वही सुविधाएँ और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दी जाती है, जो बड़े शहर के प्रतिष्ठित स्कूल में मिलती हैं। यह पहल न केवल शिक्षा का अधिकार देती है, बल्कि समान अवसर का वास भी जगाती है।

प्रतिभा को पहचान और मंच

JNV में प्रवेश जवाहर नवोदय चयन परीक्षा (JNVST) के माध्यम से होता है, जो पूरी तरह मेरिट आधारित है। इससे यह सुनिश्चित होता है कि आर्थिक तंगी नहीं, बल्कि प्रतिभा ही सफलता का आधार बने। यह व्यवस्था उन बच्चों के लिए एक नई रोशनी लेकर आती है, जो सीमित साधनों के बावजूद बड़े सपने देखते हैं।

राष्ट्रीय एकता का अनोखा प्रयोग

नवोदय विद्यालय की एक खास विशेषता है माइशन योजना। इस योजना के तहत एक राज्य के छात्र दूसरे राज्य के नवोदय विद्यालय में एक वर्ष बिताते हैं। इससे वे नई भाषा, संस्कृति और परंपराओं को सीखते हैं, जिससे "एक भारत, श्रेष्ठ भारत" की भावना मजबूत होती है।

सर्वांगीण विकास पर जोर

नवोदय विद्यालय की पढ़ाई तक सीमित नहीं है। यहाँ खेल, संगीत, कला, और व्यक्तित्व विकास पर भी विशेष ध्यान दिया जाता है। एक नवोदय छात्र न केवल एक अच्छा छात्र बनता है, बल्कि एक आत्मविश्वासी और जिम्मेदार नागरिक भी बनता है।

नि:शुल्क और आवासीय सुविधा

JNV पूरी तरह से आवासीय और नि:शुल्क विद्यालय है। यहाँ छात्र को शिक्षा, भोजन, वर्दी, और किताब सब कुछ बिना किसी शुल्क के दिया जाता है। यह सुविधा आर्थिक रूप से कमजोर परिवार के लिए किसी वरदान से कम नहीं है।

समाज पर प्रभाव

आज नवोदय विद्यालय देश के हर जिले में अपनी पहचान बना चुके हैं। यहाँ से पढ़े हुए छात्र आज इंजीनियर, डॉक्टर, अधिकारी और सैनिक बनकर देश की सेवा कर रहे हैं। नवोदय के केवल एक स्कूल नहीं, बल्कि सपनों को हकीकत में बदलने का माध्यम बन गया है।

निष्कर्ष:

जवाहर नवोदय विद्यालय के बारे में यह कहा जा सकता है कि यह एक शिक्षा संस्थान नहीं है, बल्कि यह एक आंदोलन है—समानता, अवसर और उत्कृष्टता का। राजीव गांधी की यह सोच आज भी लाखों बच्चों के जीवन को रोशन कर रही है और भारत के उज्ज्वल भविष्य का नव रख रही है।

MESSAGE From THE EDITORs

Dear Readers,

With immense pride and heartfelt emotion, we present समर्पण —a reflection of our shared journey, memories, and identity as Navodayans. As beautifully reflected in this edition , this magazine is not just a collection of words, but a living expression of our experiences, struggles, and dreams.

Navodaya has never been just a school for us—it has been a home where strangers became family and moments turned into lifelong memories. From the morning prayers to late-night conversations, from classrooms to playgrounds, every memory carries a piece of who we are today.

समर्पण is our attempt to capture those emotions—to give voice to stories that often remain unspoken. Each article, poem, and reflection in this magazine represents the strength, creativity, and unity of our Navodaya family.

As editors, we feel honored to bring together these diverse voices under one platform. This would not have been possible without the dedication of our contributors, whose words have turned this vision into reality.

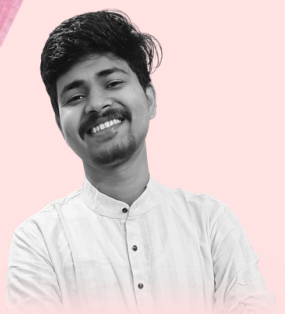
We hope that as you turn these pages, you find not just content, but connection; not just stories, but yourself within them.

Because no matter where life takes us, one truth remains constant—

Navodaya is not just a place we come from, it is a part of who we are.

Warm Regards

Editorial Team



Pranav Swaraj
JNV Purnea, Bihar
(2015-22)



Kirti
JNV Madhepura, Bihar
(2023-25)



Amit Meena
JNV Karauli, Rajasthan
(2017-24)

CONTENTS

1. **NVs Emblem** 6
2. **Navodaya Prayer** 7
3. **Navodaya Family** 9
4. **Samarpan 2025** 10
5. **Aagman 2025.** 12
6. **Explore JNVs** 15
7. **Our Achivements** 16
8. **Future Goals** 17
9. **Meet Our Team** 19
10. **Palwal Meet** 22
11. **Alumani Meet** 23
12. **Directory** 24
13. **Website** *www.navodayanshub.com* 25
14. **नवोदय से न्याय तक** 26
15. **हम से मैं तक** 27
16. **अधूरी ख्वाहिश** 28
17. **नवोदय संग यादों के पल** 29
18. **विदाई समारोह** 30
19. **अब चली जाऊंगी मैं।** 31
20. **नवोदय** (मराठी कविता) 32
21. **नवोदय की अमिट यादें** 33
22. **नवोदय संग यादों के पल** 34
23. **नवोदय : एक एहसास** 35
24. **नवोदय : उड़ान** 36
25. **याद रखना** 36
26. **नवोदय संसार-सा लगता है** 37
27. **नवोदय की छत पर बैठा बचपन** 38
28. **नवोदय वाला प्यार** 39
29. **क्या है नवोदय ?** 40
30. **Navodaya** - Where a Boy Became a Man 41
31. **नवोदय** – **यादों का घर** 42

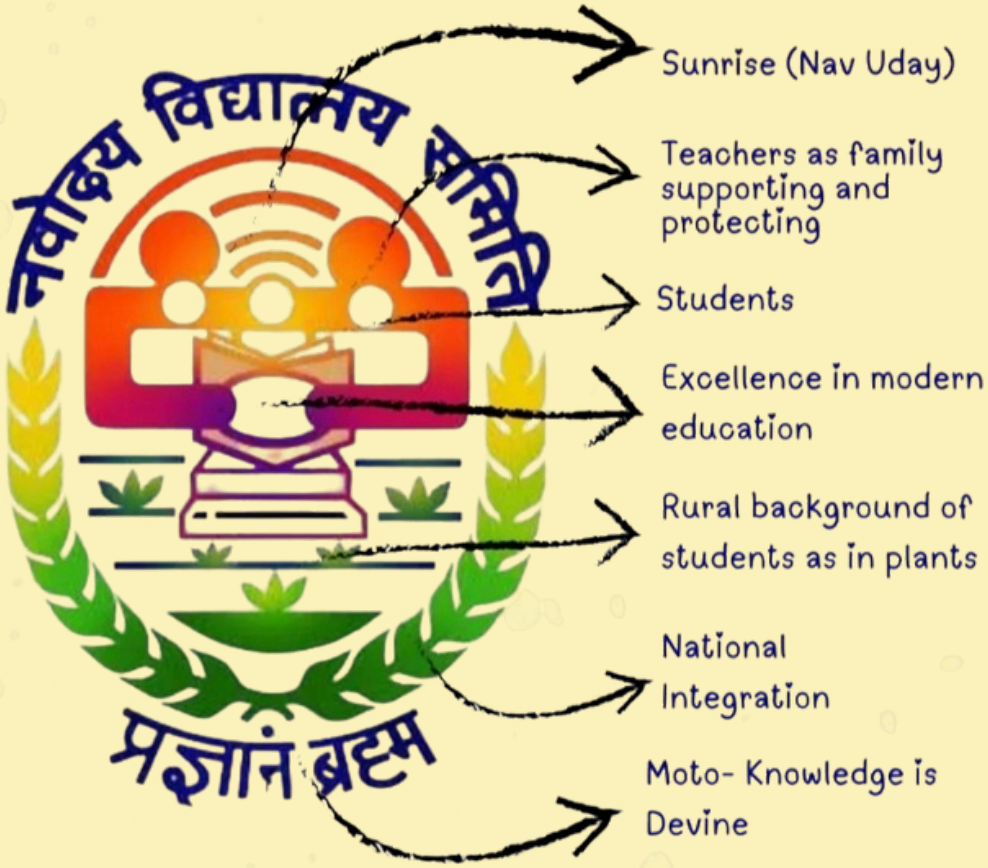


CONTENTS

31. आसान नहीं होता 43
32. Where Hope Finds a Home 44
33. Growing up as a Navodayan 45
34. नवोदय : जहाँ दीवारें नहीं, दिल जुड़ते हैं 46
35. From Excitement to Nationals 47
36. वो दिन बचपन के 48
37. Thank you Navodaya 49
38. Samarpan 2.0 50
39. Memories 52
40. Navodayan Holi 56
41. Navodayan Chef 57
42. Navodayan Spirit 58
43. Navodayan Games 59
44. Navodaya Hostel 60



NVS EMBLEM



हमीं नवोदय हो

- **Sunrise (Nav Uday):** नई सुबह और उज्ज्वल भविष्य का प्रतीक।
- **Teachers as Family:** शिक्षक परिवार की तरह मार्गदर्शन और सुरक्षा देते हैं।
- **Students:** छात्र नवोदय की पहचान और केंद्र हैं।
- **Excellence in Modern Education:** आधुनिक और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का लक्ष्य।
- **Rural Background:** ग्रामीण प्रतिभाओं को निखारने का मंच।
- **National Integration:** विविधता में एकता को बढ़ावा।
- **Motto (प्रज्ञानं ब्रह्म) :** ज्ञान ही सर्वोच्च शक्ति है।
- **हमीं नवोदय हो:** गर्व, पहचान और अपनापन की भावना।

नवोदय प्रार्थना



नवोदय प्रार्थना

हम नव युग की नयी भारती, नयी आरती
हम नव युग की नयी भारती, नयी आरती

हम स्वराज की रिचा नवल
भारत की नवलय हों
नव सूर्योदय, नव चंद्रोदय
हमी नवोदय हों

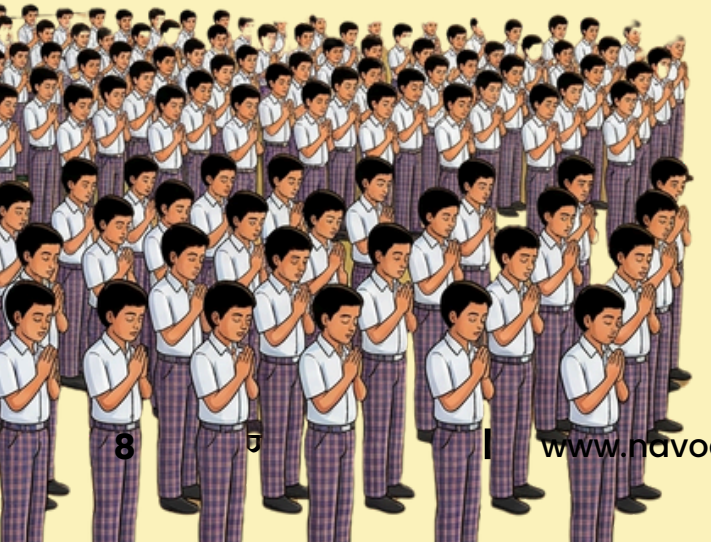
हम नव युग की नयी भारती नयी आरती
हम नव युग की नयी भारती नयी आरती

रंग जाति पद भेद रहित
हम सबका एक भगवन हो
संतान हैं धरती माँ की हम
धरती पूजा स्थान हो
धरती पूजा स्थान हो

पूजा के खिल रहे कमल दल
हम भावजल में हों
सर्वोदय के नव बसंत के, हमी नवोदय हों

हम नव युग की नयी भारती नयी आरती
हम नव युग की नयी भारती नयी आरती

मानव हैं हम हलचल हम
प्रकृति के पावन वेश में
खिलें फलें हम में संस्कृति
इस अपने भारत देश की
अपने भारत देश की
हम हिमगिरि हम नदियाँ हम
सागर की लहरें हों
जीवन की मंगलमाटी के, हमीं नवोदय हों



हम नव युग की नयी भारती नयी आरती
हम नव युग की नयी भारती नयी आरती

हरी दूधिया क्रांति शांति के,
श्रम के बंदनवार हों
भगीरथ हम धरती माँ के
सुरम पहरेदार हों
सुरम पहरेदार हों
सत्य शिव सुन्दर की पहचान

बनाएं जग में हम
अंतरिक्ष के यान ज्ञान के, हमीं नवोदय हों

हम नव युग की नयी भारती नयी आरती
हम नव युग की नयी भारती नयी आरती

हम स्वराज की रिचा नवल
भारत की नवलय हों
नव सूर्योदय नव चंद्रोदय
हम ही नवोदय हों..

हम नव युग की नयी भारती नयी आरती
हम नव युग की नयी भारती नयी आरती

हमी नवोदय हों..
हमी नवोदय हों..
हमी नवोदय हों..

Dr Suresh Chandra Vatsyayan



नवोदय परिवार — दिल्ली विश्वविद्यालय

कुछ रिश्ते स्कूल की उन हरी-भरी वादियों में जन्म लेते हैं...
जहाँ सुबह की घंटी के साथ सपने जागते थे,
जहाँ एक थाली में खाना और एक छत के नीचे जीना —
यही हमारी पहचान बन गई।
हम नवोदयन हैं।

देश के कोने-कोने से आए — किसी ने राजस्थान की धूप में पढ़ा, किसी ने कश्मीर की ठंड में, किसी ने केरल की बारिश में, किसी ने पूर्वोत्तर के पहाड़ों पर। हर राज्य का एक नवोदय, हर नवोदय की एक अलग कहानी — लेकिन दिल एक ही भाषा बोलता है। और जब हम सब दिल्ली विश्वविद्यालय पहुंचे — अलग-अलग कॉलेज, अलग-अलग रास्ते — तो एक अनजान शहर में एक जाना-पहचाना चेहरा दिखा। वो चेहरा था — नवोदय का।

यह परिवार हमसे पहले हमारे सीनियर भाई-बहनों ने बनाया — जिन्होंने एक अनजान शहर में अकेलापन महसूस किया, और फिर तय किया कि "अब जो भी नवोदयन आएगा, अकेला नहीं रहेगा।" उनकी उस एक सोच ने आज एक पूरा परिवार खड़ा कर दिया। दिल्ली के हर कॉलेज में, हर गली में — एक नवोदयन किसी दूसरे नवोदयन का हाथ थामे खड़ा है।

इस सफर में समर्पण और आगमन जैसे प्रोग्राम्स ने हमें एक सूत्र में पिरोया। ये सिर्फ इवेंट नहीं थे — ये वो पल थे जब हमने महसूस किया कि हम सच में एक परिवार हैं। जम्मू-कश्मीर से लेकर तमिलनाडु तक, गुजरात से लेकर अरुणाचल तक — देश के हर राज्य के नवोदय की मिट्टी की खुशबू आज दिल्ली की हवाओं में घुली है। Miranda House हो या Hansraj, SRCC हो या Kirori Mal — DU के हर कॉलेज में एक नवोदयन है, हर जगह परिवार है।

हमने सिर्फ खुद को नहीं संभाला — हमने अपने जूनियर्स का हाथ थामा। जब वो पहली बार दिल्ली आए — घबराए हुए, अकेले, अनजान — हम वहाँ थे। Admission में मदद, hostel की तलाश, पहले दिन का अकेलापन — हमने हर मोड़ पर उनका साथ दिया। क्योंकि यही तो नवोदय ने सिखाया था — "जो मिला है, उसे आगे बढ़ाओ।"

और आज जब हम Navodaya Day पर सैकड़ों नवोदयनों के साथ एक छत के नीचे इकट्ठा होते हैं — तो वो सिर्फ एक प्रोग्राम नहीं होता। वो होता है उन सीनियर्स की मेहनत का जश्न, हमारी टीम के जुनून का नतीजा, और उन जूनियर्स के लिए एक वादा — "तुम अकेले नहीं हो। नवोदय परिवार तुम्हारे साथ है।"

यह सफर जारी है... हर नया नवोदयन इस कहानी का एक नया अध्याय है। हम जुड़ते रहेंगे, बढ़ते रहेंगे, और बढ़ाते रहेंगे।

— नवोदय परिवार, दिल्ली विश्वविद्यालय

समर्पण 2025




शाखा : राजधानी कॉलेज


समर्पण
13 APRIL 202






नवोदय समर्पण












THE NAVODAYA LIFE
A Throwback on
the Day when you
entered this
heaven.



दिल्ली विश्वविद्यालय के नवोदयन्स का एक ऐतिहासिक महाकुंभ.....

"जहाँ संघर्ष बड़ा होता है, वहां सफलता का शोर पूरी दुनिया सुनती है।"

13 अप्रैल 2025 का दिन महज़ एक तारीख नहीं, बल्कि एक 'क्रांति' की शुरुआत थी। राजधानी कॉलेज के प्रांगण में आयोजित 'समर्पण' कार्यक्रम ने यह सिद्ध कर दिया कि जब देश के कोने-कोने से आए नवोदय के सितारे एक साथ मिलते हैं, तो नज़ारा कितना अद्भुत होता है। यह दिल्ली यूनिवर्सिटी के नवोदयन्स का पहला आधिकारिक और अब तक का सबसे विशाल कार्यक्रम रहा।

रात-दिन की अथक मेहनत और वो 'पागलपन'

इस भव्यता के पीछे उन छात्रों की हफ्तों की तपस्या छिपी है, जिन्होंने इसे सफल बनाने के लिए अपना सब कुछ दांव पर लगा दिया। दिल्ली की तपती धूप में एक कॉलेज से दूसरे कॉलेज की दौड़, रातों को जागकर की गई प्लानिंग, और हर छोटे-बड़े इंतज़ाम को खुद संभालना—यह सब आसान नहीं था।
छात्रों ने दिन-रात एक कर दिए, अपनी पढ़ाई और आराम को किनारे रखकर सिर्फ एक ही लक्ष्य पर ध्यान दिया—कि नवोदय का मान बढ़ना चाहिए। और जब परिणाम आया, तो वह हमारी कल्पना और उम्मीदों के पार निकल गया। इस 'ग्राउंड लेवल' की मेहनत ने ही 'समर्पण' को एक अविस्मरणीय अनुभव (Anubhav) बना दिया।

अनुभव का खजाना: सीनियर्स का स्नेह और मार्गदर्शन

- कार्यक्रम की असली जान बने हमारे जवाहर नवोदय विद्यालय (JNV) के गौरवशाली एल्युमनाई (Alumni)। दिल्ली के व्यस्ततम जीवन और अपनी बड़ी-बड़ी नौकरियों (Jobs) से समय निकालकर, वे सभी सीनियर्स हमें रास्ता दिखाने आए।
- एक नई राह: उन सीनियर्स ने, जो आज सरकारी (IAS, IPS, SSC, Banks) और प्राइवेट (MNCs, Tech, Corporate) सेक्टर्स के शिखर पर बैठे हैं, छात्रों को 'करियर के फ्यूचर ऑप्शंस' के बारे में जो जानकारी दी, वह किसी किताब में नहीं मिल सकती।
- प्रेरणा का स्रोत (Motivation): उन्होंने केवल ज्ञान नहीं दिया, बल्कि अपना अनुभव साझा किया—कि कैसे एक छोटे से गाँव के नवोदय से निकलकर उन्होंने दिल्ली के बड़े दफ्तरों तक का सफर तय किया।

एक अनोखा अनुभव: जो मील का पत्थर (Benchmark) बन गया

- यह कार्यक्रम केवल भाषणों तक सीमित नहीं था। यहाँ 'मैस वाली रोटी' की यादें थीं, हाउस-वॉर की कहानियाँ थीं और सबसे बढ़कर एक-दूसरे की मदद करने का वो 'नवोदयन जज्बा' था। पहली बार दिल्ली यूनिवर्सिटी के मंच पर ऐसा लगा कि पूरा भारत एक जगह सिमट आया है।

'समर्पण' ने एक ऐसा स्तर (Level) सेट कर दिया है, जो आने वाले वर्षों के लिए एक प्रेरणा बनेगा। इसने साबित कर दिया कि दिल्ली की भीड़ में नवोदयन अकेले नहीं हैं, बल्कि उनके साथ एक बहुत बड़ा और मजबूत परिवार खड़ा है।

13 अप्रैल की शाम जब ढली, तो हर चेहरे पर एक मुस्कान और आँखों में एक नया सपना था। यह तो बस आगाज़ है, दिल्ली यूनिवर्सिटी के नवोदयन्स का यह काफिला अब रुकने वाला नहीं है।

"नवोदयन मिट्टी की खुशबू अब दिल्ली के गलियारों में महक रही है!"

आगमन 2025


NAVODAYA FAMILY


NAVODAYA FAMILY


NAVODAYA FAMILY




NAVODA








NAVODAYA FAMILY


NAVODAYA FAMILY








NAVODA
Delhi

दिल्ली विश्वविद्यालय में नवोदयन प्रतिभा और परंपरा का महासंगम

भूमिका: दिल्ली की हृदयस्थली में नवोदय की गूँज

5 सितंबर 2025 का दिन केवल शिक्षक दिवस का उत्सव नहीं था, बल्कि यह दिल्ली विश्वविद्यालय (DU) के इतिहास में नवोदयन एकता के एक नए अध्याय की शुरुआत थी। आजादपुर स्थित गेस्ट हाउस के प्रांगण में जब देश के अलग-अलग कोनों से आए 500 से अधिक छात्र एकत्रित हुए, तो वातावरण में वही 'नवोदय की खुशबू' महसूस हो रही थी। दिल्ली विश्वविद्यालय की समर्पित टीम ने 'आगमन 2025' के माध्यम से उन नवागत छात्रों का स्वागत किया, जो अपने छोटे से गांव या कस्बे के नवोदय से निकलकर भारत के इस प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय में अपने सपनों को पंख देने आए थे।

मुख्य अतिथियों का गरिमामयी सानिध्य: प्रेरणा के स्तंभ

- किसी भी कार्यक्रम की सार्थकता उसमें मौजूद मार्गदर्शन से तय होती है। 'आगमन 2025' अत्यंत सौभाग्यशाली रहा कि यहाँ नवोदय समाज के वे स्तंभ मौजूद थे जिन्होंने खुद को साबित किया है:
- • श्री सीताराम नरौलिया भैया (मुख्य अतिथि): जिन्हें नवोदय विद्यालय समिति और छात्रों के बीच 'भूगोल का पर्याय' माना जाता है। उनके सानिध्य ने छात्रों को वह शैक्षणिक गहराई दी जिसकी एक नवोदयन को अपनी शुरुआती यात्रा में सबसे ज्यादा जरुरत होती है।
- • श्री भवानी शंकर भैया: उनकी उपस्थिति ने छात्रों में अनुशासन और लक्ष्य के प्रति समर्पण का भाव जगाया।
- • विशिष्ट वरिष्ठ (Seniors): कार्यक्रम में भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS), राजनीति, सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स और अन्य तकनीकी क्षेत्रों से जुड़े कई दिग्गज नवोदयन शामिल हुए। इन दिग्गजों की उपस्थिति ने यह संदेश दिया कि एक नवोदयन के लिए आसमान भी छोटा है; वह प्रशासन से लेकर राजनीति तक हर जगह अपनी चमक बिखेर सकता है।

10 दिनों का 'मिशन मोड' और टीम का समर्पण

इस कार्यक्रम की सफलता के पीछे दिल्ली विश्वविद्यालय के उन कर्मठ छात्रों की 10 दिनों की अटूट मेहनत थी, जो दिन-रात एक कर रहे थे। आजादपुर गेस्ट हाउस के चयन से लेकर, हर कॉलेज के नवोदयन तक सूचना पहुँचाने तक, टीम ने एक 'मिशन मोड' में काम किया। दिल्ली विश्वविद्यालय के विभिन्न कॉलेजों के बीच समन्वय बिठाना और 500 छात्रों के बैठने, उनके भोजन और सत्रों का प्रबंधन करना किसी चुनौती से कम नहीं था, जिसे इस टीम ने कुशलतापूर्वक निभाया।

नवोदय क्षेत्र से DU तक: सूचनाओं का अभाव और 'आगमन' का समाधान

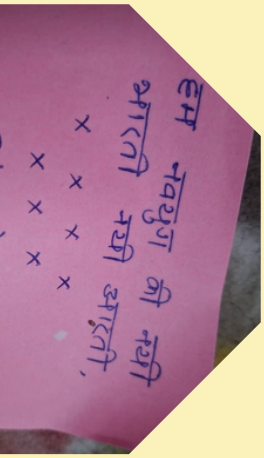
नवोदय के छात्र अक्सर उन क्षेत्रों से आते हैं जहाँ सूचनाओं का पहुँचना आज भी चुनौतीपूर्ण है। जब ये छात्र DU आते हैं, तो उन्हें कई तकनीकी और व्यावहारिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। 'आगमन' ने इन समस्याओं का सटीक समाधान प्रस्तुत किया:

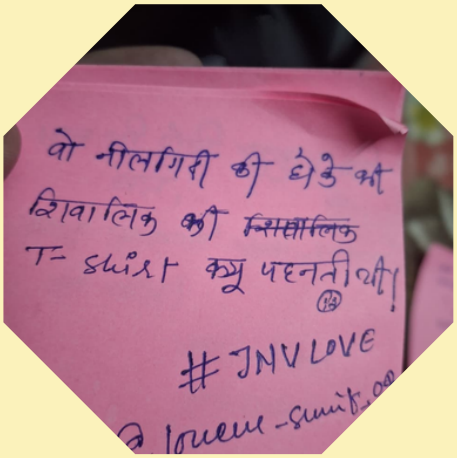
• विश्वविद्यालय की कार्यप्रणाली: DU के जटिल सिस्टम, कोर्स स्ट्रक्चर और एग्जामिनेशन पैटर्न को सरल भाषा में समझाया गया।

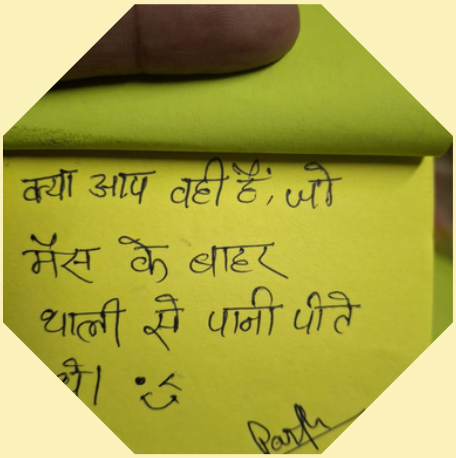
• इंटरशिप की व्यापक जानकारी: कार्यक्रम का एक बड़ा हिस्सा इंटर्नशिप पर केंद्रित था। छात्रों को बताया गया कि किस कॉलेज की इंटरशिप कब खुलती है, उनमें चयन की प्रक्रिया क्या है और कैसे एक प्रथम वर्ष का छात्र भी अपने करियर की नींव रख सकता है।
• क्षेत्रीय चुनौतियों पर संवाद: नवोदय के ग्रामीण परिवेश से आने वाले बच्चों को जो हिचकिचाहट होती है, उसे दूर करने के लिए विशेष सत्र आयोजित किए गए।

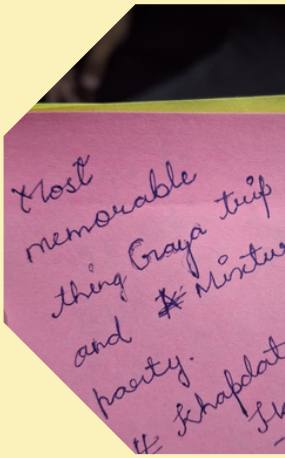
सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों में नवोदयन भागीदारी

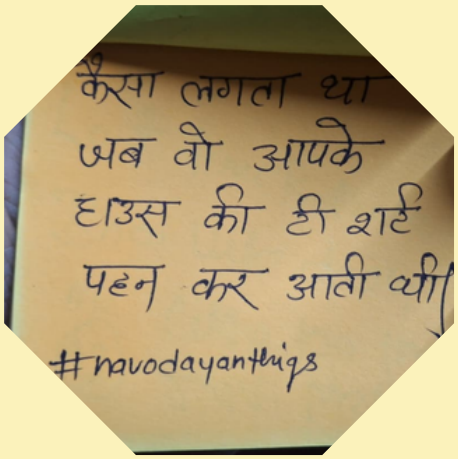
कार्यक्रम में आए राजनीति और सोशल मीडिया क्षेत्र के वरिष्ठों ने यह स्पष्ट किया कि आज का दौर केवल किताबों तक सीमित रहने का नहीं है। उन्होंने छात्रों को प्रेरित किया कि वे विश्वविद्यालय की बहसों में हिस्सा लें, छात्र राजनीति को समझें और डिजिटल माध्यमों का उपयोग अपनी आवाज़ बुलंद करने के लिए करें।

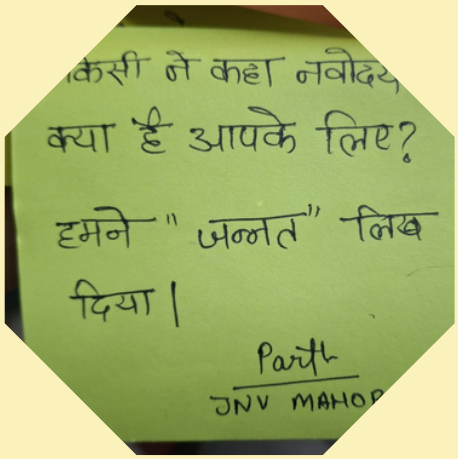


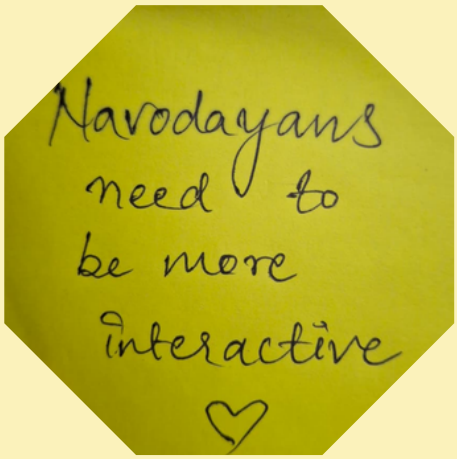












Explore JNVs



Our Achivements

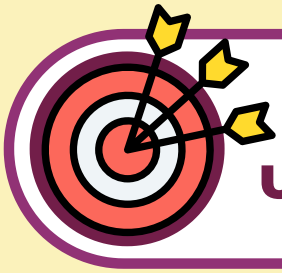
Since its inception in 2025, the Delhi University Navodaya Family has emerged as a dynamic and purpose-driven community, built by and for Navodaya students studying across Delhi University. Rooted in the values of the Jawahar Navodaya Vidyalaya system, this team has quickly grown into a trusted support network for Navodayans in the capital.

One of the team's most defining achievement has been identifying and connecting over 50 JNV students spread across various colleges of Delhi University, bringing them together under one unified platform and ensuring that no Navodayan in DU feels alone or unsupported.
In the area of education and career support, the team has made a remarkable early impact by providing academic guidance and securing internship opportunities for 25 students, helping them bridge the gap between classroom learning and real-world experience.

Understanding the challenges of student life in a new city, the team has established a unique accommodation support system, helping Navodayan students find flats and rooms within the DU campus area — completely without any brokerage — making the shifting to Delhi easier and more affordable.

The team has actively leveraged its network to connect students with senior Navodayans posted in Delhi and across various Central Government Ministries, creating a powerful mentorship and guidance channel that opens doors to opportunities in public service and beyond.

Through inter-state collaboration, the Delhi University Navodaya Family has built meaningful connections with Navodayan communities from across India, contributing to a pan-India alumni network and expanding the spirit of collective Navodayan action beyond regional boundaries.



FUTURE GOALS OF DELHI UNIVERSITY NAVODAYA FAMILY

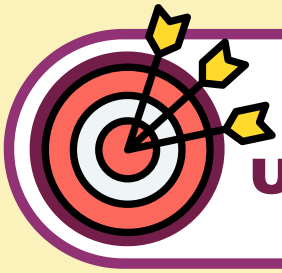
1. STRENGTHENING THE DU NAVODAYA NETWORK:
To connect all Navodayans studying across the various colleges of Delhi University — building a unified platform where every Navodayan finds their people, regardless of their college, course, or batch.

2. STUDENT SUPPORT & EMERGENCY ASSISTANCE:
To establish a dedicated support fund for Navodayan students at DU facing financial hardship, medical emergencies, or academic challenges — because no Navodayan should feel alone in a big city.

3. CAREER COUNSELLING & MENTORSHIP:
To provide structured career guidance, internship opportunities, and legal & professional mentorship by engaging senior Navodayan alumni — especially in fields of law, commerce, civil services, and beyond.

4. EDUCATIONAL & ACADEMIC ASSISTANCE:
To support meritorious Navodayan students with guidance on competitive exams, scholarships, college admissions, and academic resources — helping them navigate Delhi University with confidence.

5. CULTURAL & ALUMNI ENGAGEMENT:
To strengthen the Navodaya bond through annual alumni meets, cultural celebrations, fresher welcomes, and inter-college Navodayan gatherings — keeping the spirit of ek parivaar alive in Delhi.



FUTURE GOALS OF DELHI UNIVERSITY NAVODAYA FAMILY

6. INTER-STATE COLLABORATION:
To build bridges with Navodaya alumni associations of other states represented in Delhi University — fostering a truly national Navodayan network in the heart of the country.

7. HEALTH & SOCIAL WELFARE INITIATIVES:
To organize blood donation camps, mental health awareness sessions, and community welfare activities — giving back to society with the values Navodaya instilled in us.

8. ENVIRONMENTAL RESPONSIBILITY:
To carry forward Navodaya's tradition of nature-love through plantation drives, green campus initiatives, and environmental awareness programs across DU colleges.

9. DIGITAL PRESENCE & OUTREACH:
To build a strong digital identity for the Delhi University Navodaya Family through social media, newsletters, and a dedicated platform — so that every Navodayan in Delhi can find us easily.

10. EMPOWERING JUNIOR NAVODAYANS:
To act as a guiding hand for Navodayans who are just arriving in Delhi — helping them with admissions, hostel, city navigation, and most importantly, making them feel at home.

MEET OUR TEAM



Aashish Chautala
JNV Sirsa Haryana



Rana Bhartendu
JNV Chatra, Jharkhand



Tejashwi Priya
JNV Garhwa, Jharkhand



Amit Kumar Meena
JNV Karauli, Rajasthan



Ashvin kharadi
JNV Dungarpur, RJ



Akanshi Nagar
JNV Ghaziabad, UP



Dipti Solanki
JNV Rohtak, Haryana



Arpita Meena
JNV Sawai Madhopur, RJ

MEET OUR TEAM



Pranav Swaraj
JNV Purnea, Bihar



Atul Anand
JNV Madhepura, Bihar



Kirti
JNV Madhepura, Bihar



Manish Kumar
JNV Sirsa, Haryana



Anmol
JNV Jind Haryana



Antim Yadav
JNV Alwar, Rajasthan



Hema Meena
JNV Alwar, Rajasthan



Kavita Meena
JNV Alwar, Rajsthan

MEET OUR TEAM



Shivam Kumar
JNV Godda, Jharkhand



Prince Gupta
JNV Latehar, Jharkhand



Vikas Shukla
JNV Mahoba, UP



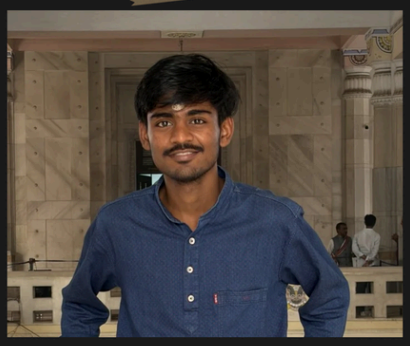
Sohil Yadav
JNV Etah, UP



Aniket
JNV Hanumangarh, RJ



Radhe Shyam
JNV Hanumangarh, RJ



Shashwat Gaurav
JNV Sitapur, UP



Umashankar Joshi
JNV Almora, UK

PALWAL meet 2026



















Alumni Meet

















DIRECTORY

Bhopal Region (113)
Chhattisgarh – 28
Madhya Pradesh – 54
Odisha – 31

Chandigarh Region (59)
Chandigarh – 1
Himachal Pradesh – 12
Jammu & Kashmir – 21
Ladakh – 2
Punjab – 23

Hyderabad Region (77)
Andaman & Nicobar Islands – 3
Andhra Pradesh – 15
Karnataka – 31
Kerala – 14
Lakshadweep – 1
Puducherry – 4
Telangana – 9



Jaipur Region (65)
Delhi – 9
Haryana – 21
Rajasthan – 35

Lucknow Region (89)
Uttarakhand – 13
Uttar Pradesh – 76

Patna Region (85)
Bihar – 39
Jharkhand – 26
West Bengal – 20

Pune Region (73)
Dadra & Nagar Haveli – 1
Daman & Diu – 2
Goa – 2
Gujarat – 34
Maharashtra – 34

Shillong Region (100)
Arunachal Pradesh – 18
Assam – 28
Manipur – 11
Meghalaya – 12
Mizoram – 8
Nagaland – 11
Sikkim – 4
Tripura – 8

WEBSITE

www.navodayanshub.com

पेश है — नवोदयंस का अपना एक्सक्लूसिव प्लेटफॉर्म

समर्पण 2.0 के इस विशेष अवसर पर दिल्ली विश्वविद्यालय की नवोदय टीम ने एक ऐसी वेबसाइट का निर्माण किया है जो सिर्फ एक वेबसाइट नहीं — बल्कि हमारे नवोदय परिवार का डिजिटल घर है।

यह मंच क्यों है खास?

सिर्फ अपनों के लिए

यह प्लेटफॉर्म केवल नवोदयंस के लिए है। कोई बाहरी शोर नहीं, कोई अनजान चेहरा नहीं — बस अपना नवोदय परिवार।

सीनियर से सीधा कनेक्शन

Education, Career, AI, Law, Politics — हर क्षेत्र में आगे बढ़े नवोदयंस अब सिर्फ एक क्लिक की दूरी पर हैं।

अपने सपनों की राह खुद चुनो, अपनों की guidance के साथ।

नवोदय डेटाबेस

एक व्यवस्थित रजिस्ट्रेशन सिस्टम जो हर नवोदयन को आपस में जोड़ेगा — चाहे वो दिल्ली में हो या दुनिया के किसी कोने में।

समर्पण + मैगजीन — अब डिजिटल भी

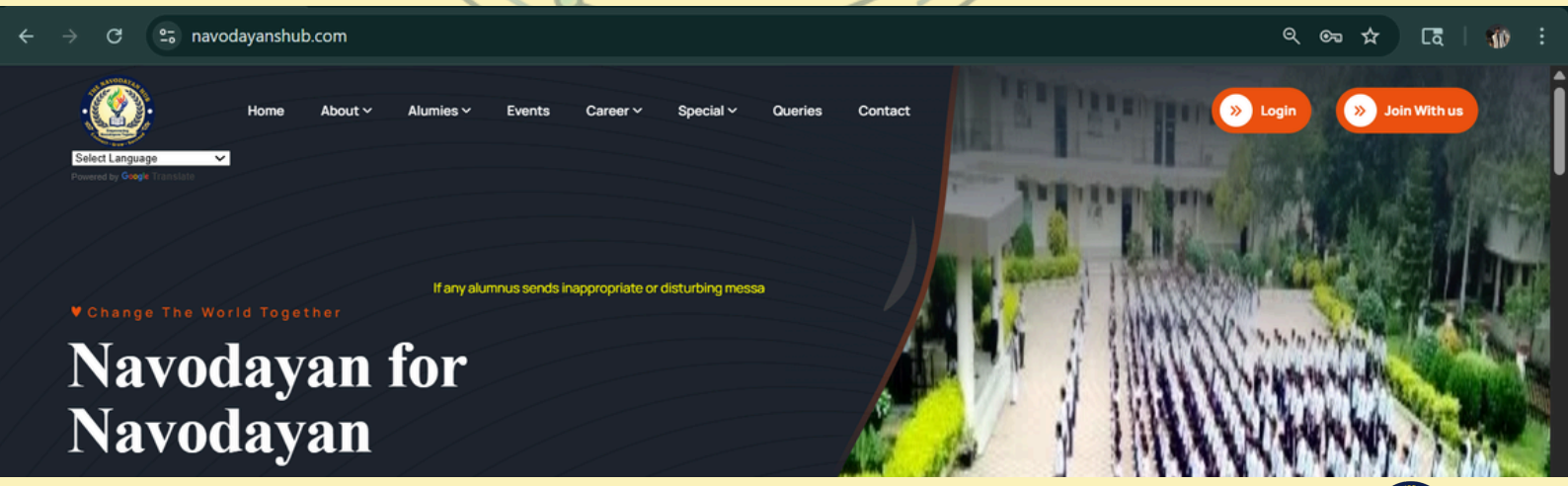
हमारी पत्रिका और कार्यक्रमों की जानकारी अब एक ही जगह, हमेशा आपकी मुट्ठी में।

हमारा संदेश

"नवोदय ने हमें एक साथ पढ़ना सिखाया,
अब यह मंच हमें एक साथ बढ़ना सिखाएगा।"

देर मत करो — अभी रजिस्टर करो।

क्योंकि यह सिर्फ एक वेबसाइट नहीं —
यह हमारा अपना घर है।



नवोदय से न्याय तक

प्रिय नवोदयन्स,

कुछ रिश्ते खून के नहीं होते, फिर भी आत्मा से जुड़े होते हैं। नवोदय वैसा ही रिश्ता है — जो एक बार बन जाए, तो उम्र भर नहीं टूटता।

नमन नवोदय

यह केवल एक नाम नहीं, यह उस मिट्टी को प्रणाम है जिसने हमें बनाया। उन सुबहों को नमन है जो प्रार्थना की धुन से शुरू होती थीं, उन रातों को सलाम है जो सपनों की बातों में गुज़र जाती थीं। हॉस्टल की वो खिड़कियाँ, मेस का वो शोर, मैदान की वो दौड़ — सब कुछ आज भी सीने में ज़िंदा है।

हम अलग-अलग ज़िलों से आए थे, अलग-अलग भाषाएँ बोलते थे — पर नवोदय ने हम सबको एक धागे में पिरो दिया। वह धागा आज भी मज़बूत है।

मैं 2013 में एक छोटे से गाँव के माहौल से निकलकर नवोदय की दहलीज़ पर आया था। उस वक्त न दुनिया की इतनी समझ थी, न रास्तों का इतना अंदाज़ा। पर नवोदय ने जो दिया, वो किसी ने सोचा भी न था।

कक्षा 6 से कक्षा 12 तक — नवोदय के आदर्शों ने मुझे धीरे-धीरे पौधे से पेड़ बनाया। अनुशासन की जड़ें दीं, ज्ञान की शाखाएँ दीं, और सेवा का भाव दिया। और आज वही पेड़ भारतीय न्यायतंत्र की एक शाखा से जुड़ा है — कैंपस लॉ सेंटर, दिल्ली विश्वविद्यालय में एलएलबी की पढ़ाई करते हुए, न्याय की राह पर अग्रसर है।

यह सफर अभी जारी है — और इस सफर की नींव में नवोदय है।

इसी धागे को थामे, इसी भावना को जीते हुए दिल्ली विश्वविद्यालय नवोदय परिवार आगे बढ़ रहा है। यह परिवार उन सभी नवोदयन्स का घर है जो दिल्ली की इस बड़ी दुनिया में अपनी जगह बना रहे हैं — अकेले नहीं, साथ मिलकर।

जेएनवी सिरसा, हरियाणा (बैच 2020) से अपनी यात्रा शुरू कर, बीएचयू से बी.कॉम ऑनर्स (2023) की डिग्री लेकर, और आज कैंपस लॉ सेंटर, दिल्ली विश्वविद्यालय में एलएलबी तृतीय वर्ष का अध्ययन करते हुए — मैं हर मोड़ पर यही महसूस करता हूँ कि जो संस्कार नवोदय ने दिए, वही आज मेरी सबसे बड़ी पूँजी हैं।

न्याय की पढ़ाई करते हुए जब भी मैं किसी कमज़ोर की आवाज़ उठाने की सोचता हूँ — तो उसके पीछे कहीं न कहीं नवोदय की वो सीख होती है कि इंसान बनो, पहले इंसान बनो।

आइए, हम सब मिलकर इस परिवार को और मज़बूत बनाएँ। अपने जूनियर्स का हाथ थामें, एक-दूसरे के सपनों में शामिल हों और समाज को वो लौटाएँ जो नवोदय ने हमें दिया।

नवोदय हमारा गर्व है।
नवोदय हमारी पहचान है।
यह परिवार — हमारा घर है और हमेशा रहेगा।

~ आशीष चौटाला
दिल्ली विश्वविद्यालय नवोदय परिवार
जेएनवी सिरसा, हरियाणा | बैच 2020
बी.कॉम ऑनर्स, BHU (2023)
LLB तृतीय वर्ष, कैंपस लॉ सेंटर, दिल्ली विश्वविद्यालय

हम से मैं तक

छूट गए वो गेट, वो सुबह की घंटी,
सपनों से भरी थी हर एक झोली।
किताबों का बोझ अब कंधों पर है,
पर यादों का शहर अब भी दिल में है।

वो प्रार्थना की आवाज़, वो मैदान की दौड़,
हर छोटी सी बात में छुपा था एक मोड़।
अब सब कुछ है, फिर भी कुछ कमी-सी है,
वो अपनापन जैसे कहीं थमी-सी है।

साझा थाली से अब तन्हा सफर है,
दोस्तों की हंसी अब बस एक असर है।
भीड़ में रहकर भी खालीपन सा है,
"हम" से "मैं" तक का ये सफर ऐसा है।

कभी हॉस्टल की छत पर तारे गिने थे,
आज अपने ही सपनों में उलझे जी रहे हैं।
जो "भाई" थे कभी, अब दूरियों में बिखर गए,
पर दिल के वो रिश्ते हर फासले से निखर गए।

ज़िंदगी ने सबको अलग राहों में मोड़ दिया,
वक़्त ने हर किसी को आगे बढ़ने को छोड़ दिया।
फिर भी दिल में एक एहसास रह जाता है
नवोदय का हर रिश्ता उम्रभर साथ निभाता है।

- तीक्ष्णांशु उत्सव
2015-22
जवाहर नवोदय विद्यालय, पूर्णिया
(बिहार)

अधूरी ख्वाहिश



मेरी वाली अरावली वाली थी,
नाम से मेरे उसको सहेलियां बहुत चिढ़ाती थी।
कभी चिढ़ती तो कभी मेरे नाम से शरमाती थी,
मेरे लिए वो सबसे लड़-झगड़ जाती थी।
मुझसा आलसी लड़के को भी सुबह सुबह पी.टी. बुलाती थी,
गर न दिखता किधर भी मैं उसकी जान निकल जाती थी।
फूलसा कोमलता और चंद्र सी सौंदर्यता लिए खूब इठलाती थी,
कभी जो रुठ जाता छुपके से वो मुझको गले लगाती थी।
सुबह का नाश्ता वो किसी जूनियर के हाथ भिजवाती थीं,
जैसे उस थाली में उसकी परवाह भी साथ आती थी।
रविवार को जब वो खुले बालों को लहराती थी,
मानो मुझको चुबंक सा अपने ओर खींच लाती थी।
हर शाम को वो हाउस के पास तितली सी मंडराती थी,
गर गुजर जाते पास से उसके यार वो बड़ा इतराती थी।
पर मानो या न मानो वो मेरे सारे नखरे उठाती थी।
सबके लिए अकड़ू अरावली वाली थी,
पर मेरे लिए वो मेरी शहजादी थी।

~ नवोदयन
ज.न.वि. पूर्णिया
(बिहार)

नवोदय संग यादों के पल.....

सुबह उठकर पीटी में जाना,
फिर लेट हो जाने पर पीटी सर की वो लाठी खाना

पीटी के बाद पड़कर सो जाना,
फिर बाथरुम में वो सिंगर बन चिल्लाना

दीवार फांदकर हीरो बन जाना,
फिर रात में बैठकर वो दोस्तो की महफ़िल जमाना

क्लास में पढ़ते पढ़ते सो जाना,
फिर टीचर के हाथो प्रसाद पाना

मेस से वो चुपके रोटी लाना,
फिर रातों मास्टर शेफ बन जाना

पानी ना आने पर मेस के हैंडपंप पर नहाने आना,
फिर वो लंबी लाइन आती देख भाग जाना

संडे की सुबह तैयार होकर आना,
फिर चाय-पूरी पर पूरा फोकस बनाना

घर से खाना आने पर साथ बैठकर खाना,
फिर बातों में वो ठहाके लगाना

26 जनवरी की सुबह स्पीकर बजाना,
फिर पूरे नवोदय को नींद से जगाना

हिम्मत करके कभी स्टेज पर आना,
फिर दो शब्द बोलकर फेमस हो जाना

शादी का सीजन आने पर मेहमान बनकर आना,
फिर पकड़े जाने पर उसेन बोल्ट बन जाना

क्लास में किसी का अचानक आना,
फिर दोस्तो का वो हूटिंग करके चिढ़ाना

एग्जाम में मेहनत से पढ़कर जाना,
फिर वो पेपर अलग ही आना

क्लास में लेट आकर टीचर को गुस्सा दिलाना,
फिर इनाम में दूसरों को भागीदार बनाना

क्लास से जल्दी चलकर आना,
फिर पनीर के लिए वो लाइन लगाना

हिमांशु कुमार
(नवोदयन)
शहीदभगत सिंह कॉलेज (दिल्ली विश्वविद्यालय)

विदाई समारोह

मैं कहता तुझसे मेरी यादों को संजोये रखना
मत भूलना मुझे
मैं यहाँ 7 साल रहा,
तेरे आंगन में खेला- कूदा, अपना बचपन को यहीं निखारा,
तूने मुझपर कोई आंच न आने दी
मुझे याद रखना
मेरे दोस्तों के साथ मेरे स्पर्श को याद रखना
जब पहली दफे ताऊ के हाथ से छूकर
नवोदय की दीवार को छुआ था
बिछुड कर भी- समय मिला तो आऊंगा जरूर
तेरे दर मुझे पहचानने से इनकार मत करना
मैं तुझे न भूल सकता न तू मुझे भूलना
नवोदय मेरे यादों को खजाने को संजोये रखना
मैं तो रखुंगा ही "नवोदय"
तू भी अपने दिल में मुझे सभाले रखना
तेरे बच्चे है हम
तेरा आने वाला कल है हम

~अमित
जे ०एन ०वी करौली



अब चली जाऊंगी मैं।

अब चला जाऊंगी मैं ,क्या तू मुझे याद करेगा।
नहीं रहूंगी आने वाले कल मैं तेरी चौखट पर
इस दुनिया में खो जाऊंगी मैं ,
क्या फिर भी मुझे याद करेगा।
तेरी हर नाली-गली साफ करी मैनें
तुझे अपना घर सा मैंने सजाया था।
अब नए आशियाने की खोज में निकल जाऊंगी
क्या तू मुझे याद करेगा।
मेरा तो मन नहीं वापिस लौटकर आने का
नए सपने अपने जो सजाऊंगी।
क्या तू मुझे फिर भी याद करेगा ।
मेरी चाहत नहीं मुडकर देखने की भी
क्या तू मिलन की फरियाद करेगा ।

मत होना तू भी इस मतलबी जमाने की तरह
मैंआखिर पूरा बदल जाऊँगी।
क्या तू मुझे फिर भी याद करेगा ।
मेरे पास कुछ नहीं देने को पर तुझे भूल नहीं पाऊंगी ।
गलती से ही पर देखना ,
एक दिन तू भी नवोदय मुझे याद करेगा

~शिवानी मीना
जे ० एन ० वी करौली
(2017-24 paasout)
B.R Ambedkar college delhi university



नवोदय (मराठी कविता)

जगाभोवती कित्येकत्या शाळा हयात आहेत
तुझ्यासारखी गोडी मिळणे खडतर आहे

जगाभोवती कित्येक रंग उधळत आहेत
पण तुझ्या मधला चौरंग तसाच मजबूत आहे

नव्या जगाशी तुझ्यापायी भिडणे शिकलो आहे
मनामनाशी तुझ्याघराशी बांधील मी आहे

नव्या तुझ्या सूर्याचे आता वर्चस्व आहे
शेवटी आकार मातीला तुझा सर्वस्व आहे

आठवणींचा भडका वणवा पेटतो आहे
तुझ्या छायेतला प्रत्येक दिवा पेटतो आहे

सरतेशेवटी सरणावरत्या कथा तुझी आहे
अग्निनंतर राखेतून भावार्थ उरला आहे

प्रसादबालाजीराव उतकर
हिंदू महाविद्यालय , दिल्ली
जवाहर नवोदय विद्यालय ,लातूर, महाराष्ट्र

नवोदय की अमिट यादें

नवोदय विद्यालय की यादें आजीवन बंधनों से बंधी,
आवासीय जीवन और शैक्षणिक अनुशासन में समाहित सात वर्षों की कहानी।
कक्षा छठी से बारहवीं तक के साझा अनुभव, हृदय में बसे,
मेस का भोजन, अच्छे शिक्षक, प्रवास योजना, शाम की पढ़ाई—सब कुछ याद आए।
हॉस्टल जीवन के घनिष्ठ बंधन, कमरों का साझा आलम,
गहन मित्रता, मध्यरात्रि की महफ़िल, हँसी-मजाक का जादू।
स्कूल छोड़ते समय भावुक विदाई, आँसुओं भरी अलविदा,
हृदयस्पर्शी पल जो जीवन भर साथ निभाएँ।
मेस में शिक्षकों संग भोजन, एक ही हॉल की मधुरता,
कभी वे परोसें, सामूहिक भोज का आनंद अनमोल।
प्रवास योजना का रोमांच, दूसरे राज्य के जेएनवी में पधारना,
नई संस्कृतियाँ, भाषाएँ, जलवायु—अनूठा अनुभव पाना।
अनुशासन का सख्त मिश्रण, सुबह की सभाएँ गूँजतीं,
खेलकूद, वृक्षारोपण परिसर में, सीख का अमृत बरसता।
स्मृति सुख की लहर, "नवोदयान" होने की भावना,
पूरे भारत में फैला परिवार, पूर्व छात्रों की दृढ़ साथी रीति।
जीवन भर की बेड़ियाँ, हृदय में बसी नवोदय की धुन।

Once a Navodayan, Always a Navodayan

प्रवीण कुमार देवपाल
JNV Barmer, Rajasthan

नवोदय संग यादों के पल

सुबह उठकर पीटी में जाना,
फिर लेट हो जाने पर पीटी सर की वो लाठी खाना

पीटी के बाद पड़कर सो जाना,
फिर बाथरुम में वो सिंगर बन चिल्लाना

दीवार फांदकर हीरो बन जाना,
फिर रात में बैठकर वो दोस्तो की महफ़िल जमाना

क्लास में पढ़ते पढ़ते सो जाना,
फिर टीचर के हाथो प्रसाद पाना

मेस से वो चुपके रोटी लाना,
फिर रातों मास्टर शेफ बन जाना

पानी ना आने पर मेस के हैंडपंप पर नहाने आना,
फिर वो लंबी लाइन आती देख भाग जाना

संडे की सुबह तैयार होकर आना,
फिर चाय-पूरी पर पूरा फोकस बनाना

घर से खाना आने पर साथ बैठकर खाना,
फिर बातों में वो ठहाके लगाना

26 जनवरी की सुबह स्पीकर बजाना,
फिर पूरे नवोदय को नींद से जगाना

हिम्मत करके कभी स्टेज पर आना,
फिर दो शब्द बोलकर फेमस हो जाना

शादी का सीजन आने पर मेहमान बनकर आना,
फिर पकड़े जाने पर उसेन बोल्ट बन जाना

क्लास में किसी का अचानक आना,
फिर दोस्तो का वो हूटिंग करके चिढ़ाना

एग्जाम में मेहनत से पढ़कर जाना,
फिर वो पेपर अलग ही आना

क्लास में लेट आकर टीचर को गुस्सा दिलाना,
फिर इनाम में दूसरों को भागीदार बनाना

क्लास से जल्दी चलकर आना,
फिर पनीर के लिए वो लाइन लगाना

~ हिमांशु कुमार
(नवोदयन)
शहीद भगत सिंह कॉलेज (दिल्ली विश्वविद्यालय)



नवोदय : एक एहसास

मैं एक नवोदय का छात्र,
आज भी वो एहसास साथ है,
जिंदगी भर रहेगा ये सच—
कि मैं उस परिवार का हिस्सा जो खास है।

सुबह के पाँच बजे का उजाला,
नींद से लड़कर उठना था,
पीटी के लिए ग्राउंड की राह,
हर दिन खुद को गढ़ना था।

वापस आकर वो मीठी नींद,
जिसका मज़ा ही कुछ और था,
फिर भागते-भागते असेंबली पहुँचना,
जैसे हर पल में शोर था।

क्लास में मस्ती, बैकबेंच की बातें,
हंसी का चलता दरिया था,
बीच-बीच में ब्रेक का आनंद,
हर दिन जैसे जश्न सा था।

डेढ़ बजे जब छुट्टी होती,
मेस की ओर कदम बढ़ते थे,
पहले लाइन में सबसे आगे,
फिर पीछे-पीछे चलते थे।

थाली में पानी पी जाना,
एक पहचान हमारी थी,
छोटी-छोटी आदतों में भी,
छुपी हुई दुनिया सारी थी।

दो घंटे की मीठी राहत,
फिर स्टडी का दौर आता था,
पर उससे पहले क्रिकेट का मैच,
दिल को खूब भाता था।

ग्राउंड में गूंजती आवाजें,
हर कोना कुछ कहता था,
खेलते-खेलते वक्त गुजर जाए,
पता ही कहाँ चलता था।

लेट हुए तो टीचर की सजा,
ग्राउंड के चक्कर लगते थे,
पर उन थकानों में भी हम,
हँसते-हँसते ही जगते थे।

रात को डिनर, फिर इंतज़ार,
अटेंडेंस लेने वाले का,
बस जल्दी आकर चला जाए,
ये ख्वाब था हर दिल वाले का।

फिर शुरू होती हॉस्टल की रात,
क्रिकेट, वॉलीबॉल, ताश के संग,
हंसी-मज़ाक और दोस्ती की बातें,
हर लम्हा था जैसे रंग।

संडे का दिन तो खास था,
सुबह से ही मैच लग जाता,
ब्रेकफास्ट क्या, लंच भी छूटे,
खेल में दिल रम जाता था।

शाम तक बस खेल ही खेल,
फिर अटेंडेंस, फिर बातें हो हजार,
दोस्तों संग हंसी-ठिठोली,
जैसे हर दिन हो त्योहार।

शुरुआत में घर की यादें,
दिल को थोड़ा सताती थीं,
पर धीरे-धीरे वही अनजाने,
जिंदगी बन जाते थे वो साथी।

सात साल कब बीत गए,
ये अहसास भी ना हुआ,
जो कभी अजनबी थे हमसे,
आज परिवार बन गया।

जब विदाई का पल आया,
आँखों में कई जज़्बात थे,
गम, खुशी, यादें, चिंताएं,
सब एक साथ साथ थे।

पर उस खामोशी के बीच,
एक सच्चाई गहरी थी—
नवोदय ने जो सिखाया हमें,
वो जिंदगी की सबसे बड़ी दौलत ठहरी थी।

~ आकाश
JNV Hamirpur
Himachal Pradesh
Batch ~ 2015 – 2022

नवोदय : उड़ान

नवोदय ने सिखाया,
गाँव की मिट्टी में भी
सोने जैसे सपने पलते हैं।

छोटे से आँगन से निकलकर,
हमने अनंत अंबर को अपना समझा,
और उड़ना भी सीखा।

दूर थे घर से,
पर हौसले और उमंग हमेशा समीप रहे
हर मुश्किल में खुद को खास बनाए रखा।

नवोदय ने बस पढ़ाया नहीं,
जीना सिखाया है—
कि जहाँ से भी उठो,
आसमान छू सकते हो।

~ Anand Shekhar

याद रखना

मैं यहाँ 7 साल रहा,
तेरे आंगन में खेला- कूदा, अपना बचपन को यहीं निखारा,
तूने मुझपर कोई आंच न आने दी
मुझे याद रखना
मेरे दोस्तों के साथ मेरे स्पर्श को याद रखना
जब पहली दफे ताऊ के हाथ से छूकर
नवोदय की दीवार को छुआ था
बिछुड कर भी- समय मिला तो आऊंगा जरूर
तेरे दर मुझे पहचानने से इनकार मत करना
मैं तूझे न भूल सकता न तू मुझे भूलना
नवोदय मेरे यादों को खजाने को संजोये रखना
मैं तो रखूंगा ही "नवोदय"
तू भी अपने दिल में मुझे सभाले रखना
तेरे बच्चे है हम
तेरा आने वाला कल है हम

~ आशीष चौटाला

नवोदय संसार-सा लगता है

नवोदय एक स्कूल नहीं,
एक संसार-सा लगता है
हवाओं में अनोखी-सी बात,
हर सुबह एक त्योहार-सा लगता है।

यहाँ मिट्टी में मेहनत है,
सपनों का सच्चा रंग
देश के कोने–कोने से आए,
बच्चों के मन का उमंग।

हॉस्टल की हँसी–मज़ाक,
और क्लासरूम की खामोशी
गेम्स फ़ील्ड की चीख–पुकार,
और नाइट मेस की आवाज़।

यहाँ दोस्त सिर्फ़ दोस्त नहीं,
परिवार का एहसास होता है
एक-दूसरे की जीत में
अपनों-सा विश्वास होता है।

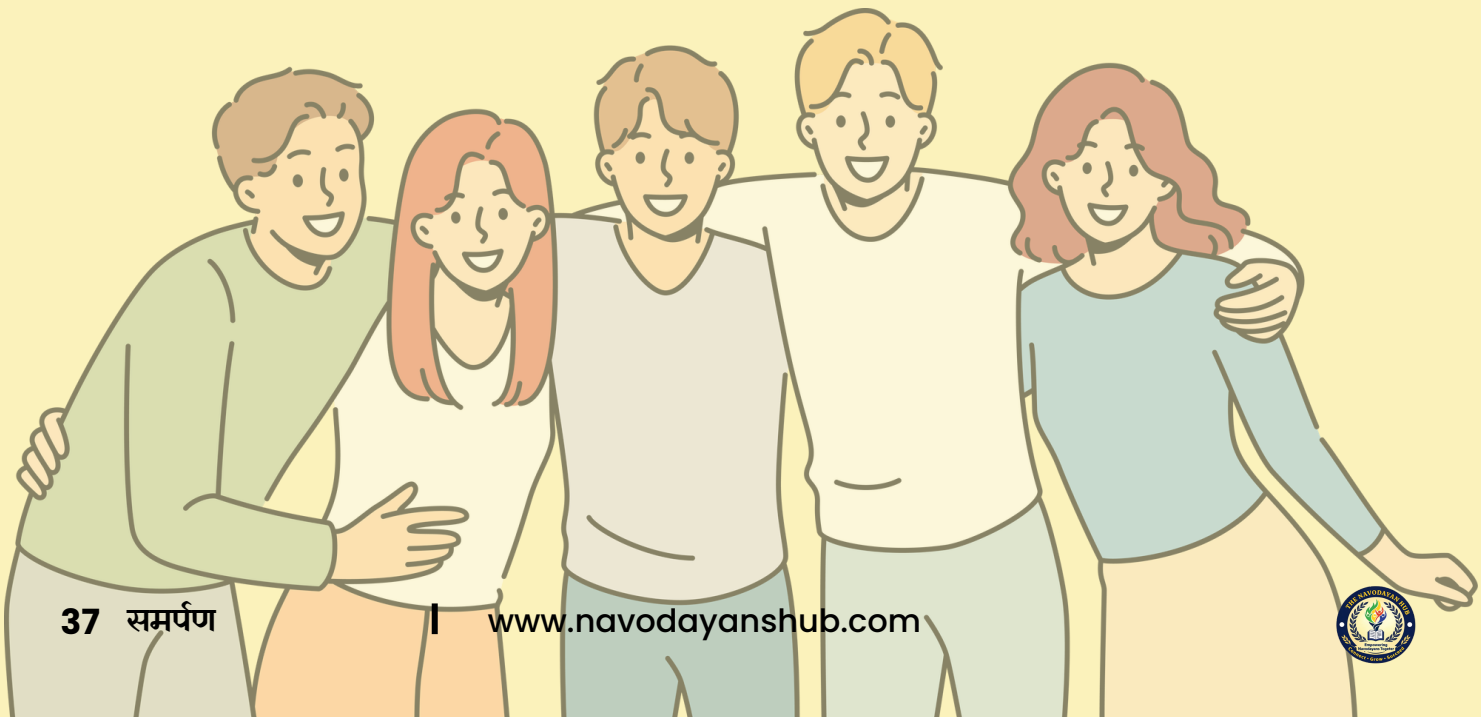
टीचर्स यहाँ किताब नहीं,
ज़िंदगी पढ़ाते हैं
ग़लतियों को रोककर नहीं,
समझकर सम्भालते हैं।

नवोदय सिखाता है,
सपने सिर्फ़ देखने का नहीं
उन्हें पूरा करने के जज़्बे का,
एक सच्चा रास्ता भी होता है।

जो यहाँ से निकलता है,
वो सिर्फ़ स्टूडेंट नहीं रहता
दिल में एक चमक,
और आँखों में हिम्मत ले जाता है।

नवोदय...
एक घर जहाँ से सब निकलते हैं
पर कोई कभी दूर नहीं जाता ॥

~पलक सिंह
जवाहर नवोदय विद्यालय (बस्ती)
2018-25



नवोदय की छत पर बैठा बचपन

नवोदय की छत पर बैठा
एक छोटा-सा ख़्वाब था,
हवा की ठंडी साँसों में
हम सबका एक जवाब था।

होस्टल की उन रातों ने
दिल को मजबूत कर दिया,
रोना भी सिखाया हमें
हँसना भी ज़रूरी कर दिया।

सुबह की वो प्रार्थना
मन को छूकर जाती थी,
थकी हुई पलकों में भी
उम्मीद नई भर जाती थी।

मैदान की मिट्टी में
जब सपने उगते जाते थे,
हम गिरते थे सौ बार मगर
फिर खड़े भी हो जाते थे।

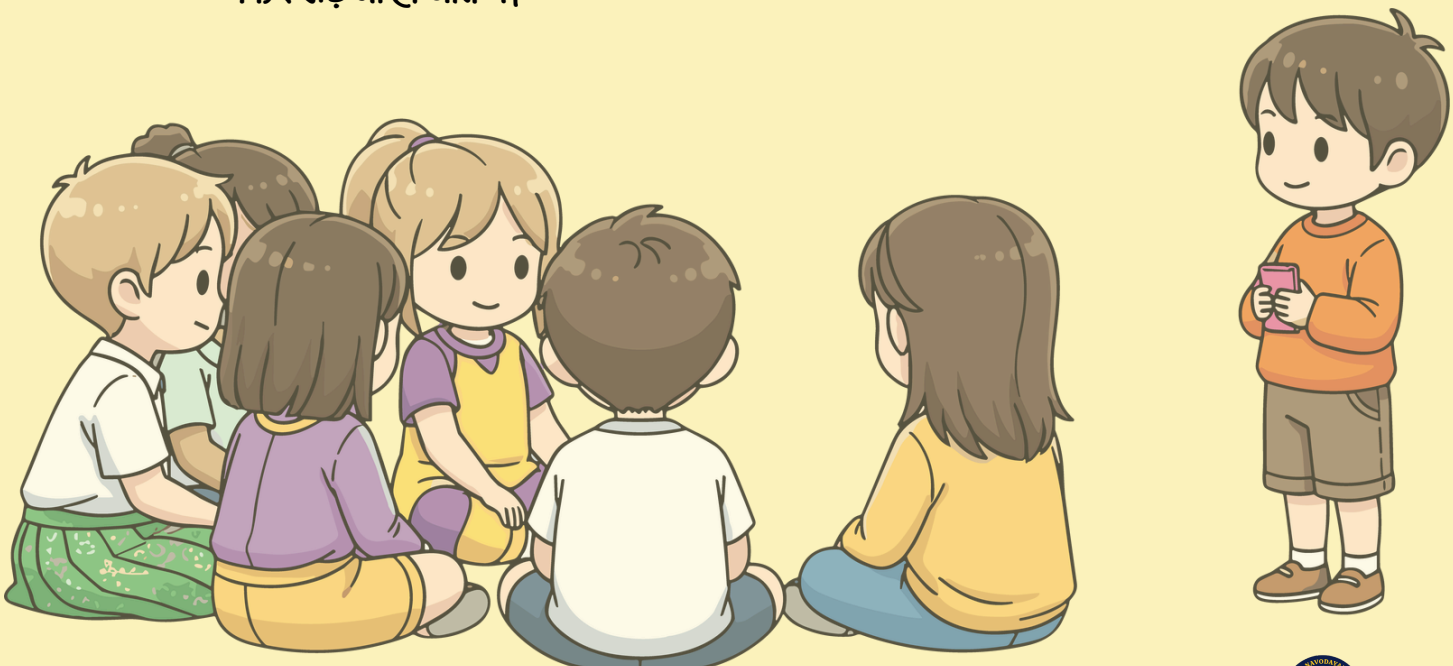
क्लासरूम की बेंचों पर
लिखी अधूरी कहानियाँ,
आज भी दिल को छू जाती
वो छोटी-सी शैतानियाँ।

दोस्त बने परिवार यहाँ,
नाता इतना गहरा था,
दूरी में भी यादों का
दरवाज़ा हमेशा खुला था।

छुट्टी मिलते ही सब में
घर जाने की जल्दी थी,
पर जाते ही वापस लौटने की
अजीब-सी हलचल थी।

नवोदय बस स्कूल नहीं
हमारी साँसों की धुन है,
जो भी यहाँ से जाता है
दिल में हमेशा गुनगुनता है ॥

~पलक सिंह
जवाहर नवोदय विद्यालय (बस्ती)
2018-25



नवोदय वाला प्यार...

मुझे पता नहीं था व्हाट इज लव,
और यह प्रपोज का फंडा।

फिर पता नहीं कैसे मैंने,
गाड़ दिया नवोदय के एग्जाम में झंडा।

पता चला मुझे जाकर वहां,
क्या होती है प्यार-व्यार की बातें यहां।

छठीं में इनोसेंट थे जो,
अब हो गए किसी और के वो।

पहले नजरों से होती थी बात,
यहीं से हुई थी प्यार की शुरुआत।

फिर मैस, फ़िल्ड और असेंबली में,
होने लगी उनसे मुलाकात।

फिर मिला मुझे एक दिन एक लैटर
देट मैक्स मी फील बेटर।

मैंम सेड नॉट सूटेबल फॉर दिस एज,
व्हाई आर यू ट्रैप्ड इन दिस केज।

हाउसमेट का था फुल सपोर्ट,
ताकि लव ड्रामा का ना हो विस्फोट।

होती थी उनसे हर बात पर तकरार,
यही तो था नवोदय वाला प्यार।

ऐसे ही करते गुजर गए साल चार,
कुछ खट्टा, कुछ मीठा था।
नवोदय वाला प्यार...

~ अन्नू भारती
ज॰ न॰ वि॰ पूर्णिया
2015-22

क्या है नवोदय ?

नवोदय जन्नत है, जीवन है, ज्योति है
नवोदय ह्याती माला की अनमोल सी मोती है
नवोदय पूजा है, भावना है, भक्ति है
नवोदय राष्ट्र के निर्माण की अभिव्यक्ति है
नवोदय पालन है, पोषण है, प्यारा अनुशासन है
नवोदय देश में चलने वाली शिक्षा का प्रशासन है
नवोदय संघर्ष है, स्वाभिमान है, सृष्टि है
नवोदय एक आदर्श समाज की दृष्टि है
नवोदय तलाश है, इतिहास है, उपन्यास है
नवोदय जीवन जीने का एक बेहतरीन अभ्यास है
नवोदय दोस्ती है, प्यार है, परिवार है
नवोदय घर से दूर माता-पिता का दूसरा अवतार है
नवोदय आस्था है, एहसास है, विश्वास है
नवोदय हमारे चरित्र की पावन लिबास है
नवोदय अरमान है, इम्तिहान है, सम्मान है
नवोदय हम पंछियों के लिए खुला आसमान है
नवोदय हिम्मत है, किस्मत है, मिन्नत है
नवोदय है तो देश को जीत है
नवोदय त्याग है, तपस्या है, तकदीर है
नवोदय युवाओं में सामर्थ्य, समर्पण व स्नेह का मंदिर है

~ Adarsh
(JNV Madhepura) 2017-24

Dedicated To All Navodayan

Navodaya - Where a Boy Became a Man

I left home clutching nothing but tears,
a child who had never outgrown his fears.
No one to wash my clothes, no one to cook,
just four bare walls and a new life to look.

Five in the morning , PT on the ground,
cold water, cold floor and that whistle's sound.
Class, then remedial, then supervisor's call,
this was our day and we lived it all.

But slowly, quietly, something took root,
in shared struggles, a friendship bore fruit.
The ones who had cried in the same dark room,
became the ones who could light up the gloom.

It wasn't a hostel , it was heaven, my friend,
a bond that time itself cannot bend.
Double parantha at breakfast — oh, what a chase,
halwa disappearing at a dangerous pace.

And at night — over the wall, into the dark,
back by dawn with an innocent, wide-eyed spark.
Holidays came but we didn't want to leave,
home was home, but here — something to believe

Those corridors, those rooms, that beautiful noise,
a hundred boys living with unbridled joys.
No textbook ever taught what that place could
to cook, to stand alone, to endure what you should.

To survive any storm without breaking apart,
Navodaya didn't teach the mind — it built the heart.
It wasn't a hostel — it was heaven, my friend,
a bond that time itself cannot bend.

Even today, when those faces appear,
we speak of those walls and we hold them dear.
We went in as children, we walked out as men
Navodaya, you shaped us again and again.

You were, you are and you'll always remain
not just a school, but a piece of our veins.

~ Dev Sharma
JNV Pallu , Hanumangarh

नवोदय – यादों का घर

नवोदय अब सिर्फ एक स्कूल नहीं रहा,
ये मेरी यादों का सबसे खूबसूरत हिस्सा बन चुका है।

आज जब मैं कॉलेज में हूँ,
तो अक्सर उन दिनों की याद आ जाती है।

शिवालिक हाउस...
एक नाम नहीं, एक एहसास है,
जहाँ हमने सिर्फ पढ़ाई नहीं,
बल्कि साथ जीना सीखा।

डोम की वो छत,
जहाँ देर रात तक बातें होती थीं,
आज भी याद आती है—
वो हँसी, वो सपने, वो बेफिक्री।

कभी फोन छुपाने के चक्कर में सस्पेंड होना,
तो कभी अमरूद तोड़ने के लिए एप्लीकेशन लिखना,
और कभी चोरी-छुपे खाना बनाना—
तब ये शरारतें थीं,
आज ये सबसे कीमती यादें हैं।

हमारी हाउस मास्टर, Mrs. Shipra Chaudhary,
थोड़ी सख्त, पर दिल से बहुत करीब।
रात के 2–3 बजे राउंड लगाना,
और हमें एक ही बेड पर दो बच्चों को सोने न देना—

तब समझ नहीं आता था,
पर आज लगता है, वो सख्ती नहीं, परवाह थी।

हम पाँच लड़कियों का वो छोटा सा ग्रुप,
हर वक्त साथ, हर बात में साथ...
पर 10वीं के बाद रास्ते अलग हो गए—
कोई कॉमर्स, कोई कोटा,
कोई पीसीबी, कोई किसी और स्कूल,
और मैं... ह्यूमैनिटीज़ की राह पर।

आज हम सब अपने-अपने रास्तों पर हैं,
पर वो रिश्ता आज भी वैसा ही है।

नवोदय ने हमें सिर्फ पढ़ाया नहीं,
हमें मजबूत बनना सिखाया।
कभी मैदान में गिरकर उठना,
तो कभी जिंदगी में संभलकर आगे बढ़ना।

आज जब पीछे मुड़कर देखती हूँ,
तो लगता है—
नवोदय ने हमें सिर्फ यादें नहीं दीं,
बल्कि हमें वो इंसान बनाया,
जो आज हम हैं।

और शायद यही वजह है,
कि कॉलेज की भीड़ में भी,
कभी-कभी दिल चुपचाप
नवोदय लौट जाना चाहता है।

~ Akanshi
Jnv Ghaziabad
Pursuing geography Hons.
From Delhi University

आसान नहीं होता

आसान नहीं होता .....
नवोदय में 12th की टीचर होना
जिस दर्द को नवोदय के बच्चे
सात साल में एक बार झेलते हैं
उस दर्द को
एक ट्वेल्थ की टीचर द्वारा
हर साल झेलना
आसान नहीं होता .....

साल के शुरू में
इन बच्चों को
एक नई उम्मीद से सींचना
और साल के अंत में
उन बच्चों के
सुनहरे भविष्य
की उम्मीद के साथ
उनके साथ एक
अंतिम फोटो खींचना

आसान नहीं होता .....
बच्चे तो चले जाते हैं
एक नई राह पर
लेकिन यादें छोड़ जाते हैं
कक्षा की हर एक बेंच पर
कितना मुश्किल होता है
एक टीचर के लिए

उन बेंचेज को रोज देखना
और अब जब उन बेंचेज पर
कुछ नए बच्चे बैठे हैं तो
उनके साथ पुराने बच्चों की
आदतों को मैच करना
आसान नहीं होता .....

रोज सुबह
पीटी से लेकर रेमेडियल सुपरवाइजेज
और नाइट अटेंडेंस तक
जिन बच्चों के साथ
सुबह से रात हो जाती है
उन बच्चों के स्कूल से
चले जाने के बाद
उनको देखने को
आंखें तरस जाती हैं

आसान नहीं होता .....
लेकिन फिर वही टीचर
खुद को समझाती है
उसके बच्चे सफलता की राह
पर आगे बढ़े
इससे ज्यादा भला
वह और क्या चाहती है
बस यही सोचकर
वह एक नए उत्साह
और एक नई उम्मीद
के साथ
एक नई प्लस टू को
पढ़ाने में जुट जाती है

और बस इसी तरह से
एक नवोदय की
प्लस टू की टीचर की जिंदगी
कट जाती है
लेकिन यकीन मानो
आसान नहीं होता .....

~SARIKA ARORA
PGT COMMERCE
JNV Madhepura



Where Hope Finds a Home

A Counsellor's Perspective on Navodaya

Good morning NAVODAYANs and my dear friends,

There are moments in life when you don't just perform a role—you become a witness to transformation. My journey as a counselor in Jawahar Navodaya Vidyalayas has been one such experience, where every child carries a story waiting to be rewritten.

Navodaya Vidyalayas are not merely schools; they are spaces where hope quietly takes root. Many students come from rural and underprivileged backgrounds, often carrying hesitation, self-doubt, and challenges far beyond their age. In their eyes, you can see uncertainty—but also a hidden spark.

As a counselor, I realized that true guidance is not about giving advice, but about listening—listening with patience, empathy, and without judgment. Sometimes, the most meaningful conversations happen outside formal sessions—in corridors, during walks, or in simple moments of trust.

And then, something beautiful begins to unfold.

The same child who once hesitated to speak starts standing confidently on stage. The student who doubted their abilities begins to dream bigger. This transformation is not sudden—it is built on trust, encouragement, and a nurturing environment.

What makes Navodaya truly special is its holistic approach. It shapes not only academic excellence but also character, resilience, and a strong sense of community. Here, students don't just learn together—they grow together.

Their success becomes more than personal achievement; it becomes a symbol of hope for their families and communities.

This journey taught me one powerful truth: when a child feels seen, heard, and valued, you don't just shape their future—you redefine it.

And in doing so, you shape the future of a nation.

Thank you.

~ Desraj Sharma
Former Counselor
Jawahar Navodaya Vidyalaya
Educator & Mentor

Growing up as a Navodayan



Growing up as a Navodayan and a staff ward, my relationship with this institution has always been deeper than that of a student. It has been my home in every sense. I am Sanjana from the 2015–2022 batch, and being the daughter of a Physical Education teacher who is so deeply loved by the school, I, too, found myself embraced by the same warmth, as if this entire place were an extended family. I wasn't just enrolled here; I was raised within its walls, watching it shape not only my education but also my identity. While my experience was a little different from that of hostelers, it gave me a quieter space to observe, reflect, and nurture my friendships without getting caught up in small conflicts. Some of my most cherished memories come from the playground, growing up there, playing freely, and finding joy in the simplest moments that slowly became a part of who I am. The corridors, classrooms, and familiar faces have been constants in my life, holding memories of laughter, comfort, and growth. As my father's retirement approaches, the thought of a life away from this campus, in a distant city, feels almost unimaginable because this place is not just where I studied, it is where I belong. Being a part of this community isn't just an experience for me; it is a piece of who I am, something I will carry with me wherever life takes me.

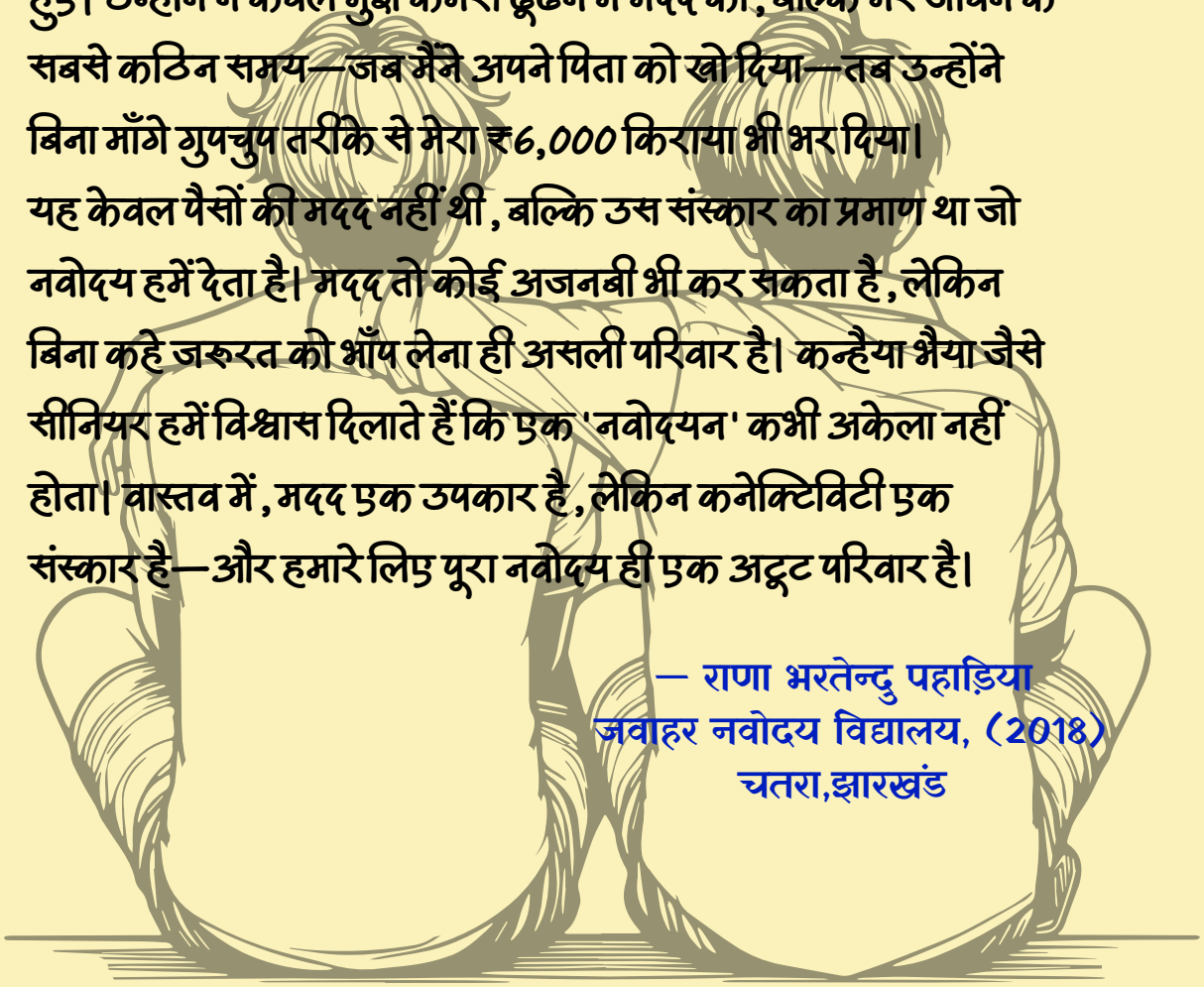
Sanjana Raj
Jnv Muzaffarpur & JNV Bhojpur
2015-2022

नवोदय : जहाँ दीवारें नहीं, दिल जुड़ते हैं

नवोदय विद्यालय हमें सिखाता है कि परिवार का अर्थ केवल आर्थिक सहायता नहीं, बल्कि 'भावनात्मक जुड़ाव' (Connectivity) है। जब हम छोटी उम्र में घर छोड़कर यहाँ आते हैं, तो सहपाठी और शिक्षक ही हमारा संसार बन जाते हैं। यहाँ बीमार होने पर साथ का जागना और मेस का खाना साझा करना हमें 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का असली अर्थ समझाता है।

नवोदय का यह जुड़ाव स्कूल के बाद भी खत्म नहीं होता। जब मैं दिल्ली विश्वविद्यालय में दाखिले के लिए आया, तो अनजान शहर में मेरे पास न ठिकाना था, न रास्ता। तब मेरे सीनियर कन्हैया भैया ढाल बनकर खड़े हुए। उन्होंने न केवल मुझे कमरा ढूँढने में मदद की, बल्कि मेरे जीवन के सबसे कठिन समय—जब मैंने अपने पिता को खो दिया—तब उन्होंने बिना माँगे गुपचुप तरीके से मेरा ₹6,000 किराया भी भर दिया।

यह केवल पैसों की मदद नहीं थी, बल्कि उस संस्कार का प्रमाण था जो नवोदय हमें देता है। मदद तो कोई अजनबी भी कर सकता है, लेकिन बिना कहे जरूरत को भाँप लेना ही असली परिवार है। कन्हैया भैया जैसे सीनियर हमें विश्वास दिलाते हैं कि एक 'नवोदयन' कभी अकेला नहीं होता। वास्तव में, मदद एक उपकार है, लेकिन कनेक्टिविटी एक संस्कार है—और हमारे लिए पूरा नवोदय ही एक अटूट परिवार है।



— राणा भरतेन्दु पहाड़िया
जवाहर नवोदय विद्यालय, (2018)
चतरा,झारखंड

From Excitement to Nationals

My Basketball Journey Across JNVs :

My journey with basketball in Navodaya began in Class 7 when I travelled to JNV Muzaffarnagar for cluster-level games. The excitement started days before, and the bus journey with friends made it unforgettable. Though I wasn't selected, I returned with beautiful memories.

Gradually, basketball became more than a game—it became a way to explore, grow, and gain confidence. By Class 8, I reached the national level after our teams secured first position at regionals. Training at JNV Jhansi was challenging, with continuous rain and limited facilities, but it taught me how to adjust and stay strong.

Despite interruptions like lockdown and board exams, I continued playing. In senior classes, I travelled mostly on my own for matches, managing both intense training and fun moments with teammates.

One funny part of my journey—I fell in almost every match! It became my signature style, and along with our playful sidelines commentary, it added joy to every game.

Finally, we reached Nationals at Patiala, where extreme heat and small struggles made the experience even more memorable.

Looking back, this journey was not just about basketball. It was about confidence, friendship, and learning to face every situation with a smile.

Navodaya gave me not just education, but memories for a lifetime.

— Akanshi
JNV Ghaziabad
Geography (Hons.), University of Delhi

वो दिन बचपन के



जब भी कोई मित्र नवोदय के बारे में कुछ भेजता है, उस जन्नत की यादें ताज़ा हो जाती हैं।
पिछले कुछ दिनों से तो ये एहसास और भी गहरा हो गया है।
कभी-कभी मन करता है कि बस एक बार फिर वहाँ हो आऊँ...
लेकिन फिर खुद को समझा लेता हूँ— अभी नहीं।
एक दिन जब सब कुछ settle हो जाएगा, तब हम पूरा बैच साथ में नवोदय लौटेंगे—
सारे लड़के और लड़कियां
और वहाँ एक हफ्ता बिताकर, फिर से वो सब जीने की कोशिश करेंगे,
जो कभी अनजाने में हमसे छूट गया था।
वहाँ रहते हुए कभी एहसास ही नहीं हुआ कि हम स्वर्ग में हैं,
जिसे हम उस समय एक कैद समझते थे।
यह मानसून का मौसम...
यही वो समय था जब नवोदय की खूबसूरती अपने चरम पर होती थी।
दो महीने की छुट्टियों के बाद हम सब पंछी,
उत्साह और ऊर्जा से भरकर वापस लौटते थे।
आसमान बादलों से ढका होता था,
और स्कूल की इमारत के आसपास पानी ही पानी...
सुबह-सुबह कीचड़ में कूदते-फांदते, दौड़ते-भागते हम लड़के,
बड़े सज-धज कर स्कूल पहुँचते थे—
और पहुँचते ही पता चलता था कि पैंट के पीछे कीचड़ की एक नई "design" बन चुकी है।
उधर, दुनिया की सबसे खूबसूरत लड़कियाँ,
सादगी के लिबास में, रंगीन छतरियों के नीचे,
शर्माती हुई स्कूल की ओर बढ़ती थीं...
जिन्हें हम छिपी नज़रों से देखने की कोशिश करते थे।
और शायद वो भी एक सरसरी नज़र हम पर डालकर,
बिना कोई भाव जताए आगे बढ़ जाती थीं—
जैसे हमें जानती ही न हों।
लेकिन उनका वो एक पल का ध्यान,
आज मिलने वाले ढेर सारे attention से कहीं ज्यादा कीमती था।
क्लास की खिड़कियों से हाथ बाहर निकालकर बारिश की बूंदों को महसूस करना...
डेस्क पर बैठे-बैठे पूरी क्लास के साथ बारिश में भीगने के ख्वाब देखना...
और सामने खड़े जामुन के पेड़ के नीचे गिरे फलों को एकटक निहारना...
आह... वो दिन!
Love you, Navodaya...
and love you so much, my dear friends.
काश, एक बार फिर वो समय लौट आता—
तो उसे जीने के लिए हम कुछ भी कुर्बान कर देते।

~ यशस्वी माथुर

Thank you Navodaya

Dear Navodaya

Thank you for everything you have given us.

I want to thank you for each and every moment.

Wherever we are today is because of you

We will be forever grateful to you

This journey started with tears in Class 6,

And ended in a way that we never want to leave you.

You gave us the best family we can never forget.

No matter where we go in the future,

We just want to say that we will always be a part of you

We will be Navodayans forever

Thank you so much for those precious 7 years.

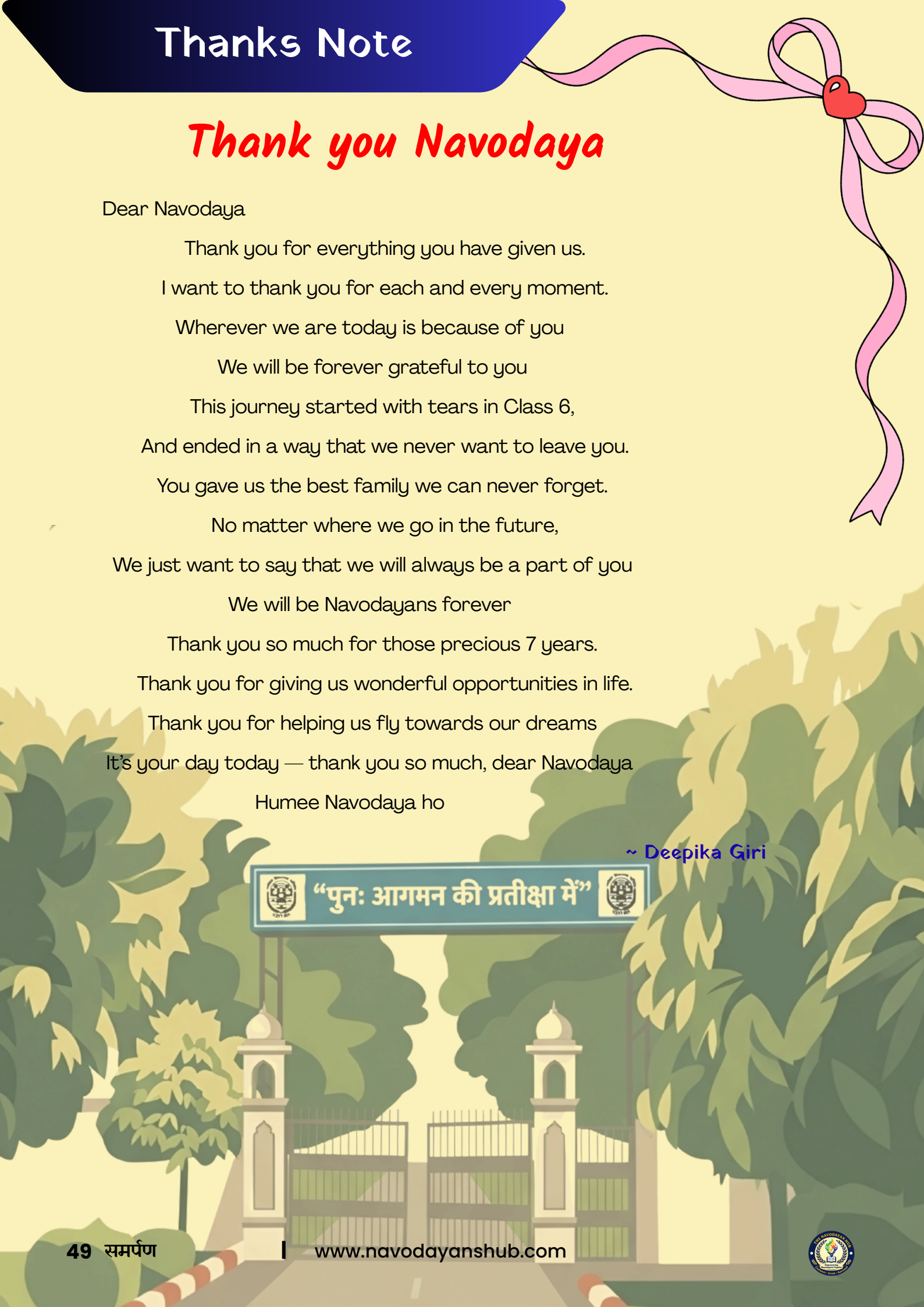
Thank you for giving us wonderful opportunities in life.

Thank you for helping us fly towards our dreams

It's your day today — thank you so much, dear Navodaya

Humee Navodaya ho

~ Deepika Giri



समर्पण 2.0























नवोदयनों,
2025 में जब हमने Samarpan की नींव रखी थी—
तब हम सिर्फ़ कुछ नवोदयन थे,
जो Delhi University की भीड़ में
एक-दूसरे को ढूंढ रहे थे।
उस दिन जो दीपक जला,
उसकी रोशनी आज भी बुझी नहीं।
फिर आया September—
Freshers Aagman का वो पल,
जब नए-नए नवोदयन University पहुँचे—
घर की याद लेकर,
आँखों में सपने लेकर।
हमने उन्हें अकेला नहीं छोड़ा।
हमने कहा—
"यार, तू नवोदय से है ना—
तो तू हमारा है।"
और वो परिवार और बड़ा हो गया।
अब आने का समय है—
Samarpan 2.0
क्योंकि एक बार जो धागा जुड़ा,
वो टूटना नहीं चाहिए।
क्योंकि जो नवोदयन अभी भी अकेला है,
उसे भी अपना परिवार मिलना चाहिए।
क्योंकि Delhi University में पढ़ रहे
हर नवोदयन को यह पता होना चाहिए—
हम यहाँ हैं।
हम साथ हैं।
हम नवोदय परिवार हैं।
Samarpan 2.0 सिर्फ़ एक event नहीं—
यह उस अदृश्य बंधन का उत्सव है,
जो बिना बताए ही हम सबको
एक-दूसरे से जोड़ देता है।
वही बंधन—
जो नवोदय की चार दीवारों में बना था,
और आज Delhi की गलियों में भी ज़िंदा है।
तो आओ—
पुराने यारों से फिर मिलो,
नए नवोदयनों को अपनाओ,
और एक बार फिर साथ मिलकर कहो—
हम ही नवोदय हो!

समर्पण 2.0

FOREVER MEMORIES



FOREVER MEMORIES



FOREVER MEMORIES

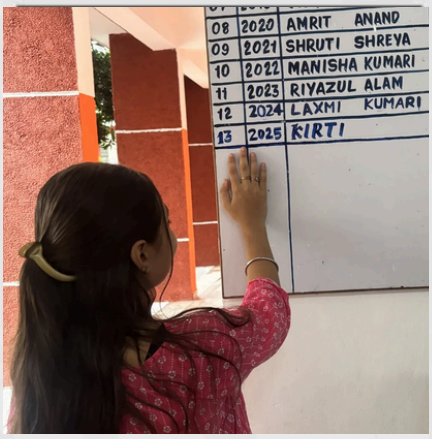




















FOREVER MEMORIES



















NAVODAYAN HOLI













NAVODAYAN CHEF















NAVODAYAN SPIRIT



NAVODAYAN GAMES

















NAVODAYA HOSTEL

















समर्पण

"एक परिवार, अनगिनत कहानियाँ"



कुछ सफर खत्म नहीं होते... बस यादों में बस जाते हैं।